IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मैथिली साहित्यकार डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्रक कथा 'मोनक औनाहटि' : एक दृष्टिकोण

नीतू कुमारी

शोधप्रज्ञा, मैथिली, PAT-2020

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

डॉ. स्वीटी कुमारी

शोध निर्देशिका

सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग

बी.बार.बी. कॉलेज, समस्तीपुर

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

मैथिली साहित्यकारक देदीप्यमान नक्षत्रा मध्य डॉ. धीरेन्द्रनाथ मिश्रक नाम समादरणीय हिनक आविर्भाव मिथिलाक धराधाम पर भेलन्हि । हिनक जन्म दरभंगा जिलाक लालपुर (सिंहवाड़ा) ग्राममे 3 सितम्बर 1952 कें भेलन्हि ।

''एक विषय ध्यातव्य जे विवेच्य व्यक्तिक ग्राम लालपुर सिंहवाड़ एक ऐतिहासिक ओ सांस्कृकि धरोहरक ग्राम रहल अछि । कहल जाइछ जे सिंहवाड़ राजा शिवसिंह बाट छल तें ओहि नाम पर नामक नाम पड़ल अछि ।''[1]

प्रारंभिक शिक्षा गाममे आ उच्च शिक्षा पटना विश्वविद्यालय, पटना 1973 मे मैथिली प्रतिष्ठामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान आ 1975 मे एम.ए. मैथिली सेहो प्रथमहि श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कएलन्हि । पी–एच.डी. केर उपाधि पटना विश्वविद्यालयसँ 1980 ई.मे आ डी.लिट्क उपाधि 1997 मे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा सँ प्राप्त भेल ।

एवंक्रममे समय बितैत रहलैक आ डॉ. मिश्र साहित्य क्षेत्र आगाँ बढ़बाक प्रयासमे लागल रहलाह । किछु समय बाद विज्ञापन निकलैक आ 16 अगस्त 1979 सँ सितम्बर 2018 धरि ल.ना. विश्वविद्यालयक अन्तर्गत क्रमशः उदयनाचार्य रोसड़ा कॉलेज, महारानी कल्याणी कॉलेज, लहेरियासराय, सी.एम., कॉलेज, दरभंगा एवं स्नातकोत्तर विश्वविद्यालय विभागमे प्राध्यापक, उपाचार्य एवं विश्वविद्यालय प्राचार्य आ विभागाध्यक्षक रूपमे क्रमशः पदस्थापित आ सितम्बर 2018 मे स्नातकोत्तर विभागसँ अवकाश प्राप्त सेहो भेलन्हि ।

एहि बीच मे डॉ. मिश्र अपन लेखनीकें पकड़ने मैथिली साहित्यक सेवामे निरन्तर लागल रहलाह आ हिनक लेखनीसँ निःसृत अनेकानेक भाषा ओ साहित्यक विषयक कतिपय पोथी प्रकाशित आ विभिन्न स्तरक पाठ्यक्रममे देश–विदेशमे अनुशंसित। नवांकुर (1981), मृततृष्णा (1982), परिचय–प्रसून (1984), मैथिली भाषा–विज्ञान, व्याकरण ओ रचना (1985), मैथिली भाषाशास्त्र (1986), चिंतन–प्रवाह (2004), अग्निपरीक्षा (2006), मोनक औनाहटि (2009), समाचार–कथा (2010), भाग्योदय (2012), हंसराज (2013), यक्षप्रश्न (2015), डीह पर घर (2021), मेरे तो बस श्याम (हिन्दीमे सम्पादित पद रचना) आदि ।

हिनक किछु रचना विभिन्न पत्र–पत्रिकामे सेहो प्रकाशित होइत रहल जेना मिथिला–दर्पण (मुम्बई), आकांक्षा (दरभंगा), परिषद–पत्रिका (दरभंगा), कुशलक्षेम (सिंखाड़ा) अर्पण (दरभंगा), मैथिली शोध पत्रिका (स्नातकोत्तर मैथिली विभाग) आदि ।

मैथिली–कथा–जगतक चर्चित हस्ताक्षर डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्रक सशक्त लेखनीसँ निःसृत 'मोनक औनाहटि' एक अनुपम कृति थीक, जाहिमे जीवन–जगतसँ सम्बद्ध अनेकानेक चित्रक उद्घाटन भेल अछि आ एहिमे विवेच्य कथाकारक प्रतिभाक सम्यक् बोध भेटैछ ।

स्वनामधन्य पंडित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एहि पोथीक प्रसंग लिखने छथि– 'अग्निपरीक्षा'मे परिक्षित श्री धीरू बाबू अर्थात् डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र एकर पीठे पर अपन कथासंग्रह लऽ समक्ष छथि । कृतिक संज्ञा थिकनि 'मोनक औनाहटि' । हमरा एकर पाण्डुलिपिक वाचनक सुयोग लागल । शीर्षक सर्वथा सार्थक प्रतीत भेल ।

हम कथा एही उद्देश्यसँ पढ़ैत छी जे जीवनक दैनन्दिन समस्या तथा परिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रिय ओ मानवीय स्थितिक चिन्तासँ मुक्ति पचबा लै किछुओ क्षण प्राप्त हो । से प्राप्त कयल तँ बेसी चाहबे की करी ।''[2]

विवेच्य संग्रहमे बाइस गोट कथा संगृहीत अछि । यथा– ''कलियुगी पूत, मारि, एहनो होइ छइ, हाहुत्तीक हाल, दू धूर जमीनो रजिस्टरी, एक दिनक दृश्य, एकरा की कहब ?, लुतुक, सीनियरमोस्ट, बुझियउ आब, भगवाने मालिक, कथी खुशीमे ?, उचटल मोन, हऽ बीतल राति, अघोरिया डेराबय, दुखनामा, विपदा, पुरस्कार (?), आरक्षणक मारल, ताबत बढ़ू, मानवता एवं मोनक औनाहटि ।''[3]

डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र अपन अन्तर्भावना केँ व्यक्त करैत लिखने छथि– ''प्रत्येक व्यक्तिक महत्तम आकांक्षा रहैत छैक । जिजीविषाक । कथाकार सेहो एकर पक्षधर रहैछ, परंच से अपन कथाक माध्यमेँ । एकर पावन लक्ष्य रहैत छैक समाजक ओहन बिंदुकेँ ताकब, ओहन बिम्बकेँ साधब, जाहि पर जीवन सूक्ष्मातिसूक्ष्म घटना आ समस्त कार्य–व्यापारक क्रियाकलाप निर्भर करैत छैक । कोनो कथाकार जीवन जीबाक इच्छा करैछ मूलतः साहित्य–सर्जना करबाक निमित्त ।''[4]

जीवनमे हरेक व्यक्तिक कामना रहैत छैक जे जीवनक मुक्तिक पश्चात् स्वर्ग–लोक भेटए; परंच यदि यथार्थतः देवदूतो पृथ्वीपर उतरि जाथि तँ जीवनक मायामे ताहि रूपेँ ई घेरल–बेढ़ल रहैत अछि, जे हुनको कोनो–ने–कोनो बहाना बनाए बापस क' दैत अछि । एही भावकेँ चरितार्थ कएल गेल अछि 'तावत बढ़ू'[5] कथामे ।

'विपदा'मे बाढ़िक विभीषिकाक सटीक चित्रण मनोरम रूपमे भेल अछि । द्रष्टव्य एहि कथाक ई अंश– ''बाढ़ि अपन क्षेत्र बदलैत रहल । पश्चात् दैनिक अखबारक कोनो प्रकारेँ आगमनसँ सभठामक मर्मान्तक सूचनासँ मर्माहत होइत रहलहुँ। दहाएल–भसिआएल । मनुक्खक लाश, की बच्चा...की बूढ़... की जवान–की मधुश्रावणी पुजनिहारि... जूही–जाही लोटनिहारि...कोनो छूटल नहि... माल–जालक त' कोनो ठेकाने नहि, मुदा, अपन वशमे किछु नहि...प्रकृतिक लीलाक बीच ककर वश चलनिहार ? सभ वेवश । मात्रा देखैत रहबाक सिवाय आओर की ?''[6]

'एक दिनक दृश्य' मानव–जीवनक विभिन्न घटनाक एक दस्तावेज थीक। एहिमे कथाकार द्वारा एही आशयक यथातथ्य चित्रण–निरूपण भेल अछि ।

द्रष्टव्य एहि कथाक ई अंश– ''एहिना कामोद भिनसर सऽ साँझ धरि भटकैत रहल आ दृश्य पर दृश्य देखैत रहल । बदलैत रंग–बिरंगी दृश्य । एकरा भेल रहइ जे हमहीं टा एहेन नहि छी । हमरे टा एहेन दशा नहि अछि । हमरा सन–सन अनेक अछि एहि दुनियाँमे । आ यैह सब सोचैत साँझमे घर घुमल छल ।''[7]

एक अतिशय इमानदार इंजीनियरक भ्रष्ट जीवनक पथ पर विरक्ति–भावक कथाक चित्र भेटैद 'भगवाने मालिक' शीर्षक कथामे । द्रष्टव्य कथाक ई अंश– ''....ओही कुर्सी पर ई बैसल छल विचित्र मुद्रामे । श्वेत–श्याम मिश्रित सघन केश–राशि जटाक रूप दिशि अग्रसर, दाढ़ी–प्रदेश मेहदीसँ रंगल रंग सदृश, इँचक हिसाबे बारह सऽ कम नहि । कपड़ा चिर्रीचिर्री भेल । सभक दिशि आश्चर्य मुद्रामे तकैत । कौतूहल भाव सर्वथा झलकैत । लगैत जेना विश्वप्रसिद्ध गणितज्ञ बेचारा वशिष्ठ नारायण अनुज हो ।''[8]

एही क्रमेँ कथाकार विभिन्न कथामे समाजक विविध समस्या ओ ओकर समाधानक दिशा–निर्देश कएने छथि, जे निस्सन्देह प्रेरणादायक अछि, शिक्षाप्रद अछि ।

संदर्भ सूची :

1. मैथिलीमे व्यवहार गीत–भूमिका, डॉ. लोकनाथ मिश्र, दरभंगा, 1968 ई.
2. मोनक औनाहटि– कभर पृष्ठ– धीरेन्द्र नाथ मिश्र
3. तत्रैव, पृ. 17
4. मोनक औनाहटि– आत्मकथ्य– धीरेन्द्र नाथ मिश्र, पृ. 14
5. मोनक औनाहटि– तावत बढ़ू– धीरेन्द्र नाथ मिश्र, पृ. 124
6. मोनक औनाहटि– विपदा– धीरेन्द्र नाथ मिश्र, पृ. 108
7. मोनक औनाहटि– एक दिनक दृश्य– धीरेन्द्र नाथ मिश्र, पृ. 49
8. मोनक औनाहटि– भगवाने मालिक– धीरेन्द्र नाथ मिश्र, पृ. 72